

जंतुओं की निशानदेही की समस्याएं

जीव-जंतुओं के अध्ययन के लिए प्रायः उन पर तरह-तरह के निशान लगाए जाते हैं। खास तौर से उनकी गतिशीलता का अध्ययन करने के लिए इस तरह के निशान लगाना आम बात है। कई शोधकर्ताओं का मानना है कि इस तरह की निशानदेही का असर इन जंतुओं के व्यवहार पर पड़ता है और यह हमारे अध्ययन को भी प्रभावित कर सकता है। यानी हम जिस जंतु का अध्ययन करने की कोशिश कर रहे हैं, वह कुछ हद तक बदल जाता है।

निशानदेही करने का मकसद यह होता है कि हम इन जंतुओं को बाद में पकड़कर कई सारी पर्यावरणीय चीजों का अध्ययन कर सकते हैं। इन निशानों में गले या टांगों में कॉलर पहनाना, मछलियों के पंखों पर छल्ले पिरोना, प्लास्टिक के पट्टे पहनाना, कानों में बालियां पहनाना जैसे पारंपरिक तरीकों के अलावा आजकल पीआईटी टैग्स भी लगाए जाते हैं। ये पैसिव इंटीग्रेटेड टैग्स यानी पीआईटी इंजेक्शन की मदद से जंतुओं के शरीर के अंदर लगा दिए जाते हैं और एक यंत्र की मदद से इनका निरीक्षण किया जा सकता है।

इन सबके पीछे मान्यता तो यही है कि ऐसे निशान लगाने के बाद उस जंतु का व्यवहार नहीं बदलेगा और न ही उसे जीवन यापन में कोई दिक्कत आएगी। मगर कई अध्ययनों से पता चलता है कि यह मान्यता सही नहीं है। जैसे यह मानना मुश्किल है कि 20 ग्राम वजन की कोई चिड़िया 5 ग्राम वजन का पट्टा पहनेगी और उसके व्यवहार में कोई अंतर नहीं आएगा। उदाहरण के लिए एक अध्ययन में पता चला कि पंखों पर पट्टे लगे पेंग्विन्स की प्रजनन



दर पीआईटी टैग्स लगे पेंग्विन्स की तुलना में 39 प्रतिशत कम रही। इसी प्रकार से यह भी देखा गया है कि छोटा-सा पीआईटी टैग भी सीपियों के व्यवहार को प्रभावित करता है। यह पता चला है कि पीआईटी टैग युक्त सीपियां ज़मीन में घुसने में ज़्यादा समय लगाती हैं। इसका परिणाम यह हो सकता कि उनके शत्रु उनका शिकार ज़्यादा आसानी से कर पाएंगे।

इस तरह के अध्ययनों से सवाल यह उठता है कि फिर प्रजातियों का अध्ययन उनके परिवेश में कैसे किया जाए। इस संदर्भ में कुछ वैज्ञानिक मानते हैं कि टेक्नॉलॉजी में विकास ही एकमात्र रास्ता है। उनका कहना है कि दूसरा रास्ता यह है कि अध्ययन ही न किया जाए, जो एक स्वीकार्य विकल्प नहीं है। और वे यह भी बताते हैं कि पिछले सालों में निशानदेही की टेक्नॉलॉजी में काफी तरक्की हुई है और अध्ययन ज़्यादा आसान हो गए हैं। **(स्रोत फीचर्स)**